

योगविभाग में योगेश्वर श्री कृष्णजन्मोत्सव का आयोजन

कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग समग्र व्यक्तित्व के लिए आवश्यक—प्रो० गिरि

कर्मयोग द्वारा आन्तरिक एवं बाह्य द्वंदों का नियंत्रण संभव—प्रो० आन्नद प्रकाश त्रिपाठी

योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन चरित्र एवं संदेशों से विश्व शान्ति की प्राप्ति — श्री महेन्द्र कुमार शर्मा

सागर: 23.08.2019— योग शिक्षा विभाग , डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर द्वारा योगेश्वर श्री कृष्णजन्मोत्सव के आयोजन में हिन्दी एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० आन्नद प्रकाश त्रिपाठी के मुख्यातिथ्य में एवं मुख्यवक्ता के रूप में जयपुर के श्री महेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व माँ सरस्वती एवं गौर जी के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का प्रारम्भ छात्र-छात्राओं द्वारा दैनिक प्रार्थनाओं से हुआ।

योगविभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरि ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य योगेश्वर श्री कृष्णजन्मोत्सव के अवसर पर श्री कृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालना है जिससे प्रत्येक व्यक्ति को समग्र स्वास्थ्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर सुखमय जीवन के प्रति जागरूक हो सके। मनुष्य स्थूल शरीर मात्र ही नहीं है यह जीवन देह प्राण मन व आत्मा का संयोग है। अतः आज के मनोकायिक समस्याओं का समाधान भी हमें समग्रता में ढुंढ़ना पड़ेगा। और श्री मदभगवद् गीता में वर्णित कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग ही हमें समग्र बनाता है।

प्रो० त्रिपाठी जी ने योग की महत्त्वता बताते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में श्री मदभगवद् गीता के उपदेशों एवं श्री कृष्ण के चरित्र को आत्मसात करना चाहिए। साथ ही अपने जीवन लक्ष्य व कर्तव्य को कभी नहीं भूलना चाहिए जिससे हम अपने आन्तरिक एवं बाह्य द्वंदों से सामना कुशल पूर्वक कर सकें। उन्होंने कहा कि समाज कल्याण एवं राष्ट्र के विकास हेतु योग को सभी द्वारा समग्र रूप से अपनाने का आह्वान किया। भारत में प्रथम विश्वविद्यालय स्तर पर स्थापित योग विभाग के कार्यक्रमों एवं योग शिक्षण को निरन्तर 1959 से कुप्लता पूर्वक शिक्षण एवं विष्व में इसके विद्यार्थियों द्वारा योग प्रसार की प्रशंसा की एवं भविष्य में योग विभाग को और अधिक विकसित करने का आश्वासन दिया।

श्री महेन्द्र जी ने श्री कृष्णजन्मोत्सव संबंधित चर्चा करते हुए बताया कि आज पुरा विश्व शांति चाहता है उसके लिए पाश्चात्य देशों ने सुख को भोग में खोजा और भारतीय मनीषियों ने उस सुख को अध्यात्म एवं आत्मा में खोजा। वस्तुतः आन्नद आत्मा का ही धर्म है इसे प्राप्त कर ही विश्वशांति प्राप्त हो सकती है। शरीर माद्यं खलुधर्म साधनम् अर्थात् धर्म का माध्यम शरीर ही है अतः शरीर के माध्यम से ही परमानन्ददावस्था तक पहुँचा जा सकता है। भगवान् श्री कृष्ण के जीवन से हम किस प्रकार लोक संपर्क , लोक संग्रह, लोक संस्कार तथा लोक व्यवस्था प्राप्त कर सकते हैं ये सब कुछ श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं से लेकर कुरुक्षेत्र के मैदान तक उनके जीवन चरित्र एवं संदेशों से प्राप्त होती है जिससे विश्व शान्ति कायम रह सके।

इस अवसर पर योग प्रशिक्षक अंकित शर्मा के निर्देशन में विभाग के छात्र छात्राओं द्वारा श्री कृष्णजन्मोत्सव पर आधारित भजन, कर्मयोग पर आधारित लघुनाटिका, राधाकृष्ण नृत्य एवं योगाभ्यास, का प्रदर्शन किया गया। सभी का धन्यवाद विभाग के सहायक प्राध्यापक डा० अरुण कुमार साव ने किया। कार्यक्रम में अधिक संख्या में विश्वविद्यालय के छात्र, छात्राएं, कर्मचारी, शिक्षक, अधिकारी एवं अभिभावकगण उपस्थित थे जिनमें दिनेश, प्रवेश, कोमल, ज्योति, मनीष, राहुल, नरेन्द्र, हेमकरण, राकेश, राजदीप, गगन, यश, महादेवी, सपना, राकेश, निधि, दुष्यंत, पूजा, आदि प्रमुख थे।

योगविभागाध्यक्ष